

हमारे पिछले पाठ में हमने आदम और नूह के बीच के सहस्राब्दी की समीक्षा की।

1. आदम की अपनी पीढ़ी के रिकॉर्ड का अंत अध्याय 5:1 में है और नूह के रिकॉर्ड की शुरुआत 5:2 में है।
2. नूह आदम के जीवन और मृत्यु का सारांश प्रस्तुत करता है और फिर दस पैट्रियाकों को जोड़ता है जिनके माध्यम से परमेश्वर का मूल वादा पीढ़ी दर पीढ़ी पहुंचा। हमने उनकी आयु और जीवन को देखकर इन्हें समीक्षा की।
3. बाइबल सामाजिक विकास या इतिहास पर स्वयं ध्यान केंद्रित नहीं करती, यह परमेश्वर के मनुष्य को बचाने के वादे को आदम से यीशु तक ट्रेस करती है।

अब हम वादा के बीज की 1000 वर्षों की अवधि के "विस्तृत दृश्य" से उस एक व्यक्ति के निकट दृश्य पर जाते हैं जिसके माध्यम से वह वादा पृथ्वी पर अब तक या अंत तक कभी भी हुई सबसे बड़ी विपत्ति के दौरान संरक्षित रहा।

नोआ

³⁷ “जैसे नूह के दिनों में हुआ, वैसे ही मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा। ³⁸ वैसे ही जैसे लोग जलप्रलय आने से पहले के दिनों तक खाते-पीते रहे, ब्याह-शादियाँ रचाते रहे जब तक नूह नाव पर नहीं चढ़ा। ³⁹ उन्हें तब तक कुछ पता नहीं चला जब तक जलप्रलय न आ गया और उन सब को बहा नहीं ले गया।

“मनुष्य के पुत्र का आना भी ऐसा ही होगा।

- मत्ती 24:37-39

कई लोग हैं जो विश्वास करते हैं कि यीशु परमेश्वर हैं और उनका वचन नया नियम में निहित है, फिर भी वे वैश्विक बाढ़ के ऐतिहासिक होने पर संदेह करते हैं, इसे मिथक मानते हैं।

हालांकि, मत्ती ने लिखा है कि यीशु ने केवल बाढ़ को एक सटीक ऐतिहासिक तथ्य के रूप में ही नहीं बताया, बल्कि अपने शिष्यों से इसे अध्ययन करने का आग्रह भी किया ताकि वे अपने भविष्य में आने वाले वापस आने के लिए तैयार हो सकें।

मैं वहाँ नहीं था, मेरे पास उस घटना की तस्वीरें नहीं हैं लेकिन मेरे पास एक प्रत्यक्षदर्शी है, नूह, और उसका वचन जो परमेश्वर के पुत्र यीशु द्वारा पुष्टि किया गया है। यह मुझे यह विश्वास करने के लिए पर्याप्त है कि जब हम नूह और बाढ़ की बात करते हैं तो हम एक ऐतिहासिक घटना के सटीक विवरण की बात कर रहे हैं।

¹ पृथ्वी पर मनुष्यों की संख्या बढ़ती रही। इन लोगों के लड़कियाँ पैदा हुईं। परमेश्वर के पुत्रों ने देखा कि ये लड़कियाँ सुन्दर हैं। इसलिए परमेश्वर के पुत्रों ने अपनी इच्छा के अनुसार जिससे चाहा उसी से विवाह किया। इन स्त्रियों ने बच्चों को जन्म दिया।

तब यहोवा ने कहा, “मनुष्य शरीर ही है। मैं सदा के लिए इनसे अपनी आत्मा को परेशान नहीं होने दूँगा। मैं उन्हें एक सौ बीस वर्ष का जीवन दूँगा।”

इन दिनों और बाद में भी नेफिलिम लोग उस देश में रहते थे। ये प्रसिद्ध लोग थे। ये लोग प्राचीन काल से बहुत वीर थे।

- उत्पत्ति 6:1-4

यह एक विवादास्पद पद है जिसे कई तरीकों से व्याख्यायित किया जा सकता है:

1. स्वर्गदूतों ने महिलाओं को पत्नियाँ बनाया और संतान उत्पन्न की – शैतान के बीज। परमेश्वर के पुत्र शब्द हमेशा पुराने नियम में स्वर्गदूतों के लिए प्रयुक्त हुआ और इसे सेप्टुआजेंट (तोरा का ग्रीक अनुवाद), जोसेफस और प्रारंभिक ईसाई लेखकों द्वारा इसी प्रकार अनूदित किया गया (यूहन्ना 1:6)।
2. सेथ के वंशज (जो एक धार्मिक व्यक्ति था) कैन के वंशजों से विवाह करने लगे। विश्वासियों और अविश्वासियों के बीच ये संबंध दुष्ट संतान उत्पन्न करते थे।
3. राक्षसी शक्तियों ने कैन के वंशजों को अधिकार में ले लिया और उन्होंने महिलाओं को लिया और समान रूप से अधिकार प्राप्त संतान उत्पन्न की जो अत्यंत दुष्ट थे।

आप जो भी व्याख्या करें, आप एक ही परिणाम पर पहुँचते हैं।

- शक्तिशाली और दुष्ट प्राणी पृथ्वी पर रहने लगे और बुराई और हिंसा के स्तर को असहनीय स्तर तक बढ़ा दिया (नेफिलिम = दानव)।
- ये पद यह समझाने के लिए दिए गए हैं कि ये लोग कैसे बने।
- इन लोगों को बाद में अधर्मी लोगों द्वारा गीतों और कथाओं में महिमामंडित किया गया।
- ईश्वर घोषणा करता है कि मनुष्य पर 120 वर्षों में न्याय होगा।

⁵ यहोवा ने देखा कि पृथ्वी पर मनुष्य बहुत अधिक पापी हैं। यहोवा ने देखा कि मनुष्य लगातार बुरी बातें ही सोचता है। ⁶ यहोवा को इस बात का दुःख हुआ, कि मैंने पृथ्वी पर मनुष्यों को क्यों बनाया? यहोवा इस बात से बहुत दुःखी हुआ।

- उत्पत्ति 6:5-6

नोआ ने उस दुनिया की स्थिति का सारांश दिया जो पूरी तरह से अराजकता थी। पाप हर जगह था। लोगों की सोच और योजनाएं हमेशा बुरी थीं।

ईश्वर पाप से पश्चात्ताप नहीं करते बल्कि वे अपने दृष्टिकोण को बदलते हैं। उनकी प्रेम और दया की दृष्टि उस जाति के प्रति होती है जो अपूर्ण हो सकती है लेकिन उसे सेवा करने का प्रयास कर रही है, और जब वह जाति पूर्ण पाप और विद्रोह में गिर जाती है तो वह दृष्टि न्याय और धार्मिक क्रोध में बदल जाती है। ईश्वर को अपने प्रेम और अपनी पवित्रता दोनों की मांगों को पूरा करना होता है।

बाइबल के विभिन्न पद हमें प्रलयपूर्व संसार की स्थिति का एक अधिक विस्तृत दृष्टिकोण देते हैं जिसने इसके विनाश का कारण बना:

1. भौतिक इच्छाओं में व्यस्तता (भौतिकवाद) – लूका 17:26-27
2. भौतिक क्षेत्र में शैतानी गतिविधि – उत्पत्ति 6:2
3. सामान्य अविश्वास – इब्रानियों 11:7
4. अधार्मिक व्यवहार – यहूदा 14-15
5. व्यापक हिंसा – उत्पत्ति 6:11-13

अपने संसार में परमेश्वर के बिना, मनुष्य भौतिकवाद और पाप की ओर उतरना शुरू करता है जो अंततः उसे नष्ट कर देता है। इससे पहले कि यह हो, परमेश्वर वादा के बीज को बचाने और संरक्षित करने के लिए हस्तक्षेप करेंगे।

इसलिए यहोवा ने कहा, “मैं अपनी बनाई पृथ्वी के सारे लोगों को खत्म कर दूँगा। मैं हर एक व्यक्ति, जानवर और पृथ्वी पर रेंगने वाले हर एक जीवजन्तु को खत्म करूँगा। मैं आकाश के पक्षियों को भी खत्म करूँगा। क्यों? क्योंकि मैं इस बात से दुःखी हूँ कि मैंने इन सभी चीजों को बनाया।”

- उत्पत्ति 6:7

यह उद्देश्य यहाँ सातवें पद में व्यक्त किया गया है और परमेश्वर के न्याय की सीमा व्यक्त की गई है: सभी नष्ट हो जाएंगे (सिवाय समुद्री जीवन के)।

लेकिन पृथ्वी पर यहोवा को खुश करने वाला एक व्यक्ति था—नूह।

- उत्पत्ति 6:8

यह नूह के रिकॉर्ड और विवरण में अंतिम पद है। वह केवल अपने बारे में लिखता है कि उसने परमेश्वर की कृपा पाई और इसी कारण वह न्याय से बच गया।

अन्य स्थानों पर हम नूह के बारे में कई बातें सीखते हैं:

1. चार स्थानों पर (उत्पत्ति 6:22; उत्पत्ति 7:5; उत्पत्ति 7:9; उत्पत्ति 7:16) कहा गया है कि नूह ने वह सब कुछ किया जो परमेश्वर ने उससे माँगा था। वह एक आज्ञाकारी व्यक्ति था।
2. उसकी केवल एक पत्नी थी – उत्पत्ति 7:13
3. वह एक उपदेशक था – 2 पतरस 2:5। उसकी उपदेश से कोई परिवर्तित नहीं हुआ (कम से कम 120 वर्षों तक) सिवाय उसके तीन पुत्रों के जो उसके साथ जहाज़ में गए।
4. वह विश्वास का पुरुष था जिसने समाज के दबाव और असफल सेवा के निराशा का सामना किया परन्तु परमेश्वर की इच्छा पूरी करता रहा – इब्रानियों 11:7
5. वह एक कुशल निर्माता था क्योंकि उसने यह महान संरचना बनाई और यह बाढ़ में बच गई।
6. बाढ़ के बाद वह पहला था जिसने बलिदान दिया और परमेश्वर को पुकारने वालों की पीढ़ी को फिर से शुरू किया; वह एक किसान भी बन गया (उत्पत्ति 9:20)।
7. उसने एक दाख की बाड़ी लगाई और शराब पीकर नशे में हो गया – उत्पत्ति 9:24।
8. परमेश्वर द्वारा उसे एक धार्मिक पुरुष माना गया, न्यायी और पूर्ण, और जो परमेश्वर के साथ चलता था – उत्पत्ति 6:9।

इसका मतलब यह नहीं है कि वह बिना गलती या दोष के था। इसका मतलब है कि उसका हृदय परमेश्वर की ओर मुड़ा हुआ था और परमेश्वर ने इस मनुष्य को अपनी कृपा दी, और इस कृपा और दया के कारण नूह परमेश्वर के सामने पूरी तरह स्वीकार्य माना गया।

यह पहली बार है जब अनुग्रह का विचार बाइबल में उल्लेखित हुआ है और एक व्यक्ति में प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शन के माध्यम से स्वीकार्यता: वह पूर्ण नहीं था, वह अपनी सेवा में सफल नहीं हुआ। विश्वास के माध्यम से स्वीकार्यता। धैर्य और आज्ञाकारिता की इच्छा के माध्यम से व्यक्त विश्वास: उसने परमेश्वर को नकारने के दबाव का सामना किया और आज्ञाकारिता में उसकी प्रतिक्रिया दी।

⁹ यह कहानी नूह के परिवार की है। अपने पूरे जीवन में नूह ने सदैव परमेश्वर का अनुसरण किया। ¹⁰ नूह के तीन पुत्र थे, शेम, हाम और येपेत।

- उत्पत्ति 6:9-10

ये नूह के पुत्रों का विवरण शुरू करते हैं और इस प्रकार उनके रिकॉर्ड को पिछले से जोड़ते हुए स्वयं का परिचय देते हैं।

¹¹¹² परमेश्वर ने पृथ्वी पर दृष्टि की और उसने देखा कि पृथ्वी को लोगों ने बर्बाद कर दिया हैं। हर जगह हिंसा पैली हुई है। लोग पापी और भ्रष्ट हो गए है, और उन्होंने पृथ्वी पर अपना जीवन बर्बाद कर दिया है।

¹³ इसलिए परमेश्वर ने नूह से कहा, “सारे लोगों ने पृथ्वी को क्रोध और हिंसा से भर दिया है। इसलिए मैं सभी जीवित प्राणियों को नष्ट करूँगा। मैं उनको पृथ्वी से हटाऊँगा।

- उत्पत्ति 6:11-13

दुनिया की स्थिति के बारे में एक और सारांश वक्तव्य है। पहले, नूह ने परिस्थितियों के बारे में प्रचार किया था और अब उनके पुत्र यह बता रहे हैं कि प्रचार के बावजूद स्थिति में कोई बदलाव नहीं आया था।

यह भी उल्लेख है कि पृथ्वी सभी मनुष्यों के साथ नष्ट हो जाएगी। बात यह है कि कुछ लोग कहते हैं कि उस क्षेत्र में एक स्थानीय बाढ़ हो सकती थी जिसे महान विश्वव्यापी बाढ़ में मिथक बना दिया गया, लेकिन बाइबल कहती है कि पूरी पृथ्वी ढकी हुई थी और यह कथन नए नियम के लेखकों द्वारा भी पुष्टि की गई है (2 पतरस 3:6).

समस्या को इस विचार से आसानी से सुलझाया जा सकता है कि यदि परमेश्वर ब्रह्मांड को बना सकता है, तो एक अकेले ग्रह को पानी से ढकना एक छोटी बात है।

सारांश

नोआ अपनी गवाही पूरी करते हैं, आदम से लेकर स्वयं तक के दस पैट्रियार्कों को जोड़ते हुए। वह दुनिया की स्थिति का वर्णन करते हैं, जो किसी तरह शैतान के प्रभाव से उत्पन्न बुरे लोगों द्वारा प्रभुत्वशाली हो गई है। वह केवल अपने आप को उस व्यक्ति के रूप में संदर्भित करते हैं जिसे परमेश्वर की दृष्टि में अनुग्रह मिला है, अपने कार्य या धैर्य के बारे में कुछ नहीं कहते। वह यह भी बताते हैं कि परमेश्वर एक निश्चित समय अवधि निर्धारित करते हैं जब वह न्याय करेंगे।

उसके पुत्र कथा को आगे बढ़ाते हैं और पुष्टि करते हैं कि संसार ने चेतावनी को अनदेखा किया है और वे परमेश्वर के न्याय के परिणामों का वर्णन करना शुरू करते हैं।

पाठ

1. धैर्य, पूर्णता नहीं

ईश्वर जानता है कि हम पूर्ण नहीं हो सकते, बिना दोष के या कभी पाप न करने वाले। वह हमसे असंभव को पूरा करने को नहीं कहता। वह देखता है कि हम जो कर सकते हैं वह प्रस्तुत करें। हमारी कमजोरियों के बावजूद जो मानवीय रूप से संभव है, वह है विश्वास करना और उस विश्वास में दृढ़ता बनाए रखना।

नोआ ने अपने विश्वास में दृढ़ता दिखाई और वह दृढ़ता परमेश्वर के साथ सहयोग के रूप में प्रकट हुई ताकि उसकी इच्छा पूरी हो सके। कुछ लोग हतोत्साहित हो जाते हैं यदि उनके पास हमेशा "पूर्ण अंक" नहीं होते। यह

या तो पूर्ण होना चाहिए या कुछ भी नहीं। परमेश्वर चाहता है कि हम खेल में बने रहें, चाहे हम अंक में आगे हों या पीछे। इस दृढ़ता के बदले में वह हमें अपने दृष्टिकोण में पूर्ण मानता है, भले ही हमने इसे वास्तविकता में प्राप्त न किया हो। यीशु ने हमारी ओर से पूर्णता पूरी की। आज, हमारा उद्देश्य मसीह के प्रति विश्वासी होना है।

2. हमारे पास 120 वर्ष नहीं हैं।

ईश्वर इन लोगों के प्रति अत्यंत दयालु थे। उन्होंने वास्तव में उन्हें बताया कि न्याय कब होगा: 120 वर्ष। कल्पना करें कि यह जानना कि न्याय आज से ठीक 120 वर्षों में होगा। मेरा विश्वास है कि यह उनकी दुष्टता का एक साक्ष्य था कि ईश्वर को आने वाले न्याय को स्पष्ट रूप से प्रकट करना पड़ा और यह व्यर्थ था।

हम, दूसरी ओर, नहीं जानते कि न्याय कब आएगा। यह आज हो सकता है या 120 वर्षों में या 120 सदियों में। एकमात्र बात जो हमें निश्चित रूप से पता है वह यह है कि हम नहीं जानते कि यीशु हमें कब न्याय करेगा। हमें हर समय तैयार रहना चाहिए और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हम हर दिन विश्वास में दृढ़ बने रहें, अपनी कमियों या दुनिया में दबाव और अविश्वास को हमें निराश न करने दें।

3. परमेश्वर अब हमें दंडित कर सकते हैं

हम अक्सर इस विचार में शरण लेते हैं कि परमेश्वर द्वारा दिया जाने वाला एकमात्र दंड संसार के अंत में न्याय होगा। परमेश्वर सर्वोच्च है, और जब भी मानवता महान पाप में डूबती है, वह अभी भी वास्तविक समय में दंड और अनुशासन देने में सक्षम है।